मसीही जीवन की प्राथमिकताएँ

मरियम और मरथा की कहानी

लूका 10 में हम पढ़ते हैं कि यीशु दो बहनों के घर में प्रवेश करते हैं। मरथा जल्दी-जल्दी सेवा में लगी रहती है। मरियम उनके चरणों में बैठकर उनके हर वचन को ध्यान से सुनती है। मरथा चिढ़ जाती है और कहती है, *"प्रभु, क्या आपको परवाह नहीं कि मेरी बहन ने मुझे अकेला काम करने के लिए छोड़ दिया है? उसे कहिए कि मेरी सहायता करे!"*

यीशु ने प्रेम और स्पष्टता से उत्तर दिया:

"मरथा, मरथा, तू बहुत बातों की चिंता और व्याकुलता करती है। पर थोड़ी ही बातें आवश्यक हैं—वास्तव में केवल एक। मरियम ने उत्तम भाग चुन लिया है, जो उससे छीना नहीं जाएगा।"

(लूका 10:41–42)

पवित्र आत्मा ने इस कहानी को इसलिए सुरक्षित रखा है ताकि हमें स्वर्ग की वास्तविक प्राथमिकता दिखाई दे। उत्तम भाग सेवा, व्यस्तता या केवल मंत्रालय नहीं है। उत्तम भाग स्वयं यीशु हैं। वही उनकी उपस्थिति है।

दो सामर्थी सत्य

1. उत्तम भाग संबंध है, प्रदर्शन नहीं।

स्वयं यीशु ने कहा केवल "एक ही बात" आवश्यक है और मरियम ने उसे चुन लिया। हमारा सबसे बड़ा उद्देश्य है उनके चरणों में बैठना और उनकी उपस्थिति को ग्रहण करना—न कि अपनी गतिविधियों या व्यस्तताओं से खुद को आँकना।

2. उनकी उपस्थिति में जो हमें मिलता है, उसे कोई छीन नहीं सकता।

यीशु ने घोषित किया, *"यह उससे छीना नहीं जाएगा।"* मंत्रालय के अवसर आते-जाते रहते हैं। जिम्मेदारियाँ बदलती रहती हैं। परन्तु यीशु के साथ निकटता अनन्तकाल तक बनी रहती है।

दो झूठ जो लोग मान लेते हैं

1. "मेरी कीमत परमेश्वर के सामने उसी में है जो मैं उसके लिए करता हूँ।"
यह मरथा का जाल है—सोचना कि सेवा ही प्रेम का प्रमाण है। पर सच्चाई यह है कि हमारी कीमत इस पर निर्भर है कि हम उसकी संतान हैं, न कि हमारे प्रदर्शन पर।

2. "मेरे पास यीशु के चरणों में बैठने का समय नहीं है।"
बहुत लोग मानते हैं कि वे उसकी निकटता के लिए बहुत व्यस्त हैं। परन्तु स्थायी फल और शांति पाने का एकमात्र मार्ग है उसकी उपस्थिति में बने रहना। उसके बिना हमारे सबसे अच्छे प्रयास भी खाली हो जाते हैं।

परमेश्वर की योजना है — संबंध

एदन की वाटिका में, परमेश्वर का मनुष्य के साथ पहला कार्य काम सौंपना नहीं था, बल्कि आदम और हव्वा के साथ दिन की ठंडी हवा में चलना था। संगति ज़िम्मेदारी से पहले आई। संबंध श्रम से पहले था। उपस्थिति मिशन से पहले थी। आज भी यही परमेश्वर का क्रम है।

पवित्र आत्मा पिन्तेकुस्त (Pentecost) के दिन उंडेला गया ताकि जो खो गया था, उसे बहाल किया जा सके। वह प्रचंड आँधी, आग की जिह्वाएँ, स्वर्गीय भाषाएँ—ये सब परमेश्वर का यह घोषणा करना था: *"मैं तुम्हारे साथ हूँ, मैं तुम्हारे भीतर हूँ, और मैं तुम्हें कभी नहीं छोड़ूँगा।"*

पिन्तेकुस्त का उद्देश्य केवल मंत्रालय के लिए सामर्थ नहीं था, बल्कि गहरे संबंध के लिए निकटता था। संबंध से ही फल निकलता है। याद रखें, पिन्तेकुस्त का मतलब है कि अब पवित्र आत्मा हमारे भीतर एक सामर्थी रीति से निवास करता है।

यूहन्ना 15:4 — *"मुझ में बने रहो, और मैं तुम में। जैसे डाल अपने आप से फल नहीं ला सकती, जब तक वह दाखलता में न बनी रहे, वैसे ही तुम भी नहीं, जब तक मुझ में न बने रहो।"*

फल परिश्रम और पसीने से नहीं आता; फल रहना और बने रहना का स्वाभाविक परिणाम है। जब आप उसके चरणों में बैठते हैं, जब आप उसकी उपस्थिति में झुकते हैं, तो पवित्र आत्मा वह उत्पन्न करता है जो आप कभी स्वयं नहीं कर सकते।

तीन सामर्थी सत्य

1. पवित्र आत्मा की उपस्थिति हमारे भीतर परमेश्वर का स्थायी निवास है।
पिन्तेकुस्त केवल इतिहास का एक क्षण नहीं था; यह परमेश्वर की घोषणा थी: *"मैं तुम्हारे साथ हूँ।"* उसकी उपस्थिति मौसमी या अस्थायी नहीं—यह निरंतर है।

2. मंत्रालय सबसे अच्छा तब बहता है जब वह संगति से निकलता है, दबाव से नहीं।
जब हम मसीह में बने रहते हैं, तो मंत्रालय भरपूरता से बहता है। हम खालीपन या बाध्यता से सेवा नहीं करते, बल्कि उसके जीवन की प्रचुरता से करते हैं।

3. परमेश्वर के साथ निकटता वह सब बहाल करती है जो पाप ने छीन लिया।
एदन की वाटिका में पाप ने अलगाव पैदा किया, पर पिन्तेकुस्त में पवित्र आत्मा ने परमेश्वर की निकटता को बहाल किया। जो संगति एदन में खो गई थी—उसके साथ चलना—अब पवित्र आत्मा के हमारे भीतर वास करने से फिर से मिल गया है।

दो झूठ जो कुछ मसीही मान लेते हैं

1. "पवित्र आत्मा केवल मुझे सेवा के लिए सामर्थ देने के लिए है।"
बहुत लोग पिन्तेकुस्त को केवल मंत्रालय के सामर्थीकरण के रूप में देखते हैं। पर गहरी सच्चाई यह है कि पवित्र आत्मा हमें परमेश्वर के साथ निकटता बहाल करने के लिए दिया गया है—सामर्थ संबंध से बहता है।

2. "अगर मैं परमेश्वर के लिए और अधिक मेहनत करूँ, तो मैं अधिक फल लाऊँगा।"
बिना बने रहे प्रयास करना थकान और खालीपन की ओर ले जाता है। सच्चा आत्मिक फल परिश्रम से नहीं, बल्कि दाखलता से जुड़े रहने से निकलता है।

पहला और सबसे बड़ा आज्ञा

यीशु ने प्राथमिकताओं के बारे में बहुत स्पष्ट कहा: *"तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रखना।"* (मत्ती 22:37)

प्रेम केवल आज्ञाकारिता नहीं है। प्रेम में भावनाएँ शामिल हैं। इसमें स्नेह शामिल है। इसमें पवित्र आत्मा हमारे हृदयों को जगाकर परमेश्वर की सुंदरता का अनुभव कराना शामिल है।

"चखकर देखो कि यहोवा भला है।" (भजन संहिता 34:8)
पवित्र आत्मा हमें एक सूखी और अलगाव वाली विश्वास-जीवन में नहीं बुलाता। वह हमें लालसा, भूख, तड़प और आनन्द देता है। मरियम का यीशु के चरणों में बैठना ठंडी आज्ञाकारिता नहीं था—यह एक उत्साही प्रेम था।

एक दिन उत्तम है

भजनकार ने इस प्राथमिकता को समझते हुए कहा: *"क्योंकि तेरे आँगनों में एक दिन और कहीं के हजार दिन से अच्छा है।"* (भजन संहिता 84:10)

परमेश्वर की उपस्थिति कोई विचार नहीं है जिसे केवल पढ़ा जाए; यह एक वास्तविकता है जिसे अनुभव किया जाना चाहिए। पवित्र आत्मा हमें भरता है, हमारे हृदयों को कोमल करता है, और पूरे वातावरण को बदल देता है। प्रभु के आँगन दूर नहीं हैं—वे निकट हैं, और वे ही वह स्थान हैं जिनकी हमें लालसा है।

यदि यह तुम्हारे लिए अभी दूर लगता है, तो प्रार्थना करो। परमेश्वर से विनती करो कि वह तुम्हारे हृदय को खोले और इस वचन की सजीव सच्चाई को प्रकट करे।

प्रेम कैसा दिखता है?

प्रेम आराधना में एक मुस्कान जैसा दिखता है। प्रेम आँसुओं जैसा दिखता है जब उसकी उपस्थिति पास आती है। प्रेम उस "हाँ" की तरह दिखता है जो आत्मा के संकेत पर धीरे से कही जाती है। प्रेम हाथ उठाने जैसा दिखता है—कर्तव्य से नहीं, बल्कि आनन्द से।

हाँ, यीशु ने कहा: *"यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।"* (यूहन्ना 14:15) लेकिन उन्होंने यह भी प्रकट किया कि पवित्र आत्मा सहायक, सहारा देने वाला और मित्र के रूप में आएगा। केवल आज्ञाकारिता बिना निकटता के सूखा नियम बन जाती है। परंतु जब आज्ञाकारिता निकटता और अनुभव से आती है, तो वह आनन्दमय समर्पण बन जाती है।

उत्तम भाग चुनना

मरथा की तरह, हम सब इस प्रलोभन में आते हैं कि हमारी सेवा ही हमारे समर्पण का प्रमाण है। लेकिन यीशु ने कहा: *"केवल एक ही बात आवश्यक है।"*

वह एक बात है—संबंध। उपस्थिति। प्रेम।

कलीसिया हमेशा व्यस्त रहेगी। पर व्यस्तता बिना उपस्थिति के खाली है। पवित्र आत्मा हमें यीशु के चरणों में लौटाता है, जहाँ से हर सच्चा कार्य शुरू होता है।

प्राथमिकता मंत्रालय नहीं है। प्राथमिकता प्रेम है। और प्रेम से ही चमत्कार, फल और कटनी आती है। प्रेम से ही हमें साहस मिलता है कि हम सब कुछ छोड़कर उसी को चुनें।

तीन झूठ, जिन्हें कुछ मसीही मानते हैं

1. "मेरी सेवा मेरे समर्पण का प्रमाण है।"

यह मरथा का जाल है—सोचना कि गतिविधि ही निकटता है। पर यीशु ने दिखाया कि मरियम का प्रेम ही उत्तम भाग था।

2. "परमेश्वर से प्रेम का अर्थ केवल कर्तव्य है, भावना नहीं।"

कुछ लोग सोचते हैं कि मसीही परिपक्वता का मतलब भावनाओं से रहित विश्वास है। सत्य यह है कि पवित्र आत्मा हमारे हृदयों को आनन्द, आँसुओं, लालसा और उत्साह से जगाता है।

3. "परमेश्वर की उपस्थिति दूर और अप्राप्य है।"

यह झूठ कहता है कि उसके आँगन दूर हैं। सत्य यह है कि पवित्र आत्मा के द्वारा उसकी उपस्थिति यहाँ और अभी है, वह हमारे भीतर और हमारे बीच वास करता है।

निष्कर्ष: यीशु के चरणों में बुलाहट

कलीसिया की संस्कृति अक्सर उन लोगों को पुरस्कृत करती है जो मरथा की तरह व्यस्त रहते हैं, परन्तु स्वर्ग अब भी मरियम के स्थान का उत्सव मनाता है।

इसलिए अपने जीवन की प्राथमिकता बनाइए:

- उसकी उपस्थिति में ठहरना।
- उसकी वाणी सुनना।

- आत्मा को अपने हृदय को प्रेम से भरने देना।
- उसे सबसे पहले प्रेम करना, सब बातों से ऊपर।
- और यह खोजना कि यीशु के साथ एक दिन अन्यत्र हजार दिनों से बेहतर है।